

सरल स्वभाव से बुद्धि को विशाल और दूरादेशी बनाओ

6.12.69

आज की सभा में कौनसी विशेष खुशबू भी है और विशेष आकर्षण भी है? स्नेह तो सभी का है ही। आप को किसलिए बुलाया है? ऐसे समझें कि यह जो भी सभी आये हैं वह वापस जाने के लिए तैयार होकर आये हैं। एवररेडी जो होते हैं वह सदैव तैयार ही होते हैं। बुलावा हुआ और एक सेकेण्ड में अपना रहा हुआ सभी कुछ समेट भी सकते और जम्प भी दे सकते। प्रैक्टिकल में देखा भी ना कि ड्रामा के बुलावे पर कितना टाइम लगा? एक तरफ समेटना दूसरे तरफ हाई जम्प देना। यह दोनों सीन देखी - यह ड्रामा में किसलिए हुआ? सिखलाने के लिए। तो ऐसे एवररेडी बनना पड़ेगा। अभी एवररेडी की लाइन चालू हो गई है। इस लाइन के अन्दर किसका भी नम्बर आ सकता है। जो सभी के संकल्प में है वह कभी नहीं होना है। होगा फिर भी अनायास ही। यह ब्राह्मण कुल की रीति रस्म चालू हो चुकी है। यह रीति रस्म भी ड्रामा में क्यों बनी हुई है, उसका भी बहुत गुप्त रहस्य है। तो ऐसा पुरुषार्थ पहले से ही कर लो जो फौरन समेट भी सको और जम्प भी के सको। समेटने की शक्ति किसमें हो सकती है? जो सरल स्वभाव वाले होंगे उसमें समेटने की शक्ति सहज आ सकती है। जो सरल स्वभाव वाला होगा वह सभी का सहयोगी भी होगा। जो सभी का स्नेही होता है उनको सभी द्वारा सहयोग प्राप्त होता है। इसलिए सभी बातों का सामना करना वा समेटना सहज ही कर सकता है। और जितना सरल स्वभाव वाले होंगे उतना माया कम सामना करेगी। वह सभी को प्रिय लगता है। सरल स्वभाव वाले का व्यर्थ संकल्प कभी नहीं चलता। समय व्यर्थ नहीं जाता। व्यर्थ संकल्प न चलने के कारण उनकी बुद्धि विशाल और दूरादेशी रहती है। इसलिए उनके आगे कोई भी समस्या सामना नहीं कर सकती। जितनी सरलता होगी उतनी स्वच्छता भी होगी। स्वच्छता सभी को अपने तरफ आकर्षित करती है। स्वच्छता अर्थात् सच्चाई और सफाई। सच्चाई और सफाई तब होगी जब अपने स्वभाव को सरल बनायेंगे। सरल स्वभाव वाला बहुरूपी भी बन सकता है। कोमल चीज़ को जैसे भी रूप में लाओ आ सकती है। तो अब गोल्ड बने हो लेकिन गोल्ड को अब अग्नि में गलाओ तो मोल्ड भी हो सके। इस कमी के कारण सर्विस की सफलता में कमी पड़ती है। अपने को कैसे मोल्ड करें इसके लिए भट्टी में आये हो। एक है मोड़ने की शक्ति और दूसरी है ब्रेक लगाने की शक्ति। मोड़ना भी है तो कितने समय में? भल मोड़ना आता भी है लेकिन कहाँ-कहाँ समय बहुत लग जाता है। समय न लगे वह संकल्प करना है। संकल्प किया और सिद्ध हुआ। भट्टी से ऐसा बनकर के निकलना है जो हर संकल्प हर शब्द सिद्ध हो। वह लोग रिद्धि-सिद्धि प्राप्त करते हैं लेकिन यहाँ योग की रिद्धि-सिद्धि है। याद की रिद्धि-सिद्धि क्या होती है, वह सीखना है। जो सिद्धि को प्राप्त होते हैं उनके संकल्प, शब्द और हर कर्म सिद्ध होता है। एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं उठेगा। संकल्प वह उठेगा जो सिद्ध होंगे। सर्विस-एबुल उसको कहा जाता है जिसका एक भी संकल्प बिना सिद्धि के न जाये। अथवा ऐसा कोई संकल्प न उठना चाहिए जो सिद्ध होने वाला न हो। आप के एक-एक संकल्प की वैल्यू है। लेकिन जब अपनी वैल्यू को खुद रखेंगे तब अनेक आत्मायें भी आप रत्नों की वैल्यू को परखेंगी। इस भट्टी से हरेक का चेहरा चैतन्य म्युज़ियम बनकर निकले। और म्युज़ियम तो बहुत बनाये लेकिन अब एक-एक को अपने

चेहरे को चैतन्य म्यूज़ियम बनाना है। इस चैतन्य चेहरे के म्यूज़ियम में कितने चित्र हैं? इस चेहरे के म्यूज़ियम में कौन-कौन से चित्र फिट करेंगे? म्यूज़ियम में पहले चित्रों की फिटिंग करते हैं, बाद में डेकोरेशन होता है फिर उद्घाटन कराना होता है फिर ओपीनियन लेना होता है। तो आप के इस चैतन्य म्यूज़ियम में तीन मुख्य चित्र हैं। भृकुटी, नयन और मुख। इन द्वारा ही आपकी स्मृति, वृत्ति दृष्टि और वाणी का मालूम पड़ता है। जैसे त्रिमूर्ति, लक्ष्मी नारायण और सीढ़ी यह तीन मुख्य चित्र हैं ना। इसमें सारा ज्ञान आ जाता है। वैसे ही इस चेहरे के अन्दर यह चित्र अनादि फिट हैं। इनकी ऐसी डेकोरेशन हो जो दूर से यह चित्र अपने तरफ आकर्षण करें। आकर्षण होने के बिना रह नहीं सकेंगे। आप लोग म्यूज़ियम बनाते हो तो कोशिश करते हो ना कि चित्र ऐसे डेकोरेट हों जो दूर से आकर्षण करें। किसको बुलाना भी न पड़े। वैसे ही आप हरेक को अपना म्यूज़ियम ऐसा तैयार करना है। जो कुछ सुना है उसको गहराई से सोचकर के एक-एक रंग में समा देना है। जिन्होंने जितना गहराई से सुना है उतना अपने चलन में प्रत्यक्ष रूप में लाया है? उन संस्कारों को प्रत्यक्ष करने के लिए एक-एक बात की गहराई में जाओ और अपने एक-एक रंग में वह संस्कार समाओ। कोई भी चीज़ को किसमें समाना होता है तो क्या करना होता है? एक तो गहराई में जाना होता है और अन्दर दबाना होता है। कूटना पड़ता है। कूटना अर्थात् हरेक बात को महीन बनाना। इस भट्टी से संस्कारों को प्रत्यक्ष रूप में लाने की प्रतिज्ञा कर के निकलना है। जितना बाप को प्रत्यक्ष करेंगे उतना खुद को प्रत्यक्ष करेंगे। बाप को प्रत्यक्ष करने से आप की प्रत्यक्षता बाप के साथ ही है। ऐसा बनना और फिर बनाना है। समझा।

इस संगठन में ऐसी शक्ति है जो चाहे वह कर सकते हैं। सिर्फ संकल्प करें तो सृष्टि बदल सकती है। ऐसी शक्तिशाली आत्मायें हैं। लेकिन अब संकल्प कौनसा पावरफुल करना है? उसको फिर से रिफ्रेश करना है।

इस मधुबन के लिए ही गायन है कि कोई ऐसा-वैसा पाँव नहीं रख सकता। मधुबन है सौभाग्य की लकीर। उसके अन्दर और कोई पाँव नहीं रख सकता। आप सभी को बापदादा समझाते हैं कि यह स्नेह की लकीर है जिस स्नेह के घेराव के अन्दर बापदादा निवास करते हैं। इसके अन्दर कोई आ नहीं सकता। चाहे भल अपना शीश भी उतार कर रखे। साकार रूप में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है। उसके लिए तो आगे चलकर जब रोना देखेंगे तब आप लोगों को उसकी वैल्यू का मालूम होगा। रो-रोकर आप के चरणों में गिरेंगे। स्नेह की एक बूँद की प्यासी हो चरणों में गिरेंगे। आप लोगों ने स्नेह के सागर को अपने में समाया है। वह एक बूँद के भी प्यासे रहेंगे। ऐसा सौभाग्य किसका हो सकता है? सर्व सम्बन्धों का सुख, रसना जो आप आत्माओं में भरी हुई है वह और कोई में नहीं हो सकती। तो ड्रामा में अपने इतने ऊंच भाग्य को सदैव सामने रखना। सामने रखने से रिटर्न देना आप ही याद आयेगा। अच्छा—

“प्लेन याद से प्लैन्स की सफलता”

20.12.69

आज बापदादा क्या देख रहे हैं। क्या देखने और क्या करने आये हैं? आज बापदादा अपने अति स्नेही बच्चों से एक वायदा कराने लिये आये हैं। वायदा करने में तो यह आत्माएं आदि से ही प्रवीण हैं। जैसे शुरू में वायदा करने में कोई देरी नहीं की, कुछ सोचा नहीं। इस रीति से

अब भी बापदादा वायदा लेने लिये आये हैं। यूं तो सारे ड्रामा में अनेक आत्माओं के बीच तुम आत्मायें ही हिम्मतवान प्रसिद्ध हुई हो। जो हिम्मत रख बापदादा के समीप रहे और स्नेह भी लिया। मदद ली भी और की भी। तो उसी संस्कारों को फिर से टेस्ट करने आये हैं। एवररेडी तो सभी हैं ना। वायदा यही है कि अभी से सभी एकता, स्वच्छता, महीनता, मधुरता और मन, वाणी, कर्म में महानता यह 5 बातें एक एक के हर कदम से नजर आवें। सुनाया था ना भट्टी के बाद सर्विस स्थानों पर निकले। वह दिन याद है ना। लोग सभी क्या कहते थे? सभी के मुख से यही निकलता था कि यह एक ही सांचे से निकली हुई हैं। सभी की बात एक ही है, सभी के रहन-सहन, सभी के आकर्षण जहाँ देखो वही नजर आता है। वह किसका प्रभाव पड़ता था? अव्यक्ति पालना का प्रभाव। व्यक्त में होते हुए भी सभी को अव्यक्त फरिश्ते नजर आते थे। साधारण रूप में आकर्षण मूर्त और अलौकिक व्यक्तियाँ देखने में आते थे। अब फिर से वह जैसे 16 वर्ष की भट्टी, यह फिर 16 दिन की भट्टी। लेकिन अब से हरेक को यह मालूम पड़ना चाहिए कि यह बदल कर आये हैं, दुनिया को बदलने के लिये। सारे दैवी परिवार की इस ग्रुप पर विशेष आंख है। तो विशेष आत्माओं को अपनी विशेषता दिखानी है, कौनसी विशेषता? वह बातें तो पांच सुनाई। जब यह 5 बातें हर संकल्प, हर बोल, हर कर्म में याद रखेंगे तब ही विशेष आत्माएं सभी को नजर आयेंगे। जब अपने में विशेषता लायेंगे तब बाप को भी प्रत्यक्ष कर सकेंगे। अपने सम्पूर्ण संस्कारों से ही बाप को प्रत्यक्ष कर सकते हो। सिर्फ सर्विस के प्लैन्स से नहीं लेकिन अपने सम्पूर्ण संस्कारों से, अपनी सम्पूर्ण शक्ति से बाप को प्रत्यक्ष कर सकते हो। भल प्लैन्स तो बनाने पड़ते हैं लेकिन प्लैन्स भी सफलता में तब आयेंगे जब प्लैन के साथ आपनी लग्न पूरी हो। प्लेन याद हो। कोई भी मिक्सचैर्टी न हो। प्लेन याद से ही सफल हो सकते हैं। प्लैन के पहले चैकिंग करो। प्लेन याद में हैं। शुरू शुरू का वायदा क्या है वह गीत याद है ना, उसको फिर से साकार रूप में लाना है अर्थात् बुद्धि की लगन एक तुम्हीं से ही है वह साक्षात्कार साकार रूप में सभी को होना चाहिए। अब समझ क्या करने आये हो और क्या देखने आये हो? भाँति-भाँति की बातें बाबा को अच्छी लगती हैं। यह रूह रूहान है। इसमें कोई फेल होते हैं। अभी तो तुम सभी को फेल करने वाले बन गये हो। फेल होते नहीं अपने को फेल होने नहीं देते — यह भी ठीक है। लेकिन फील करते हो। अपनी बात में विजयी बनने का आर्ट सीखना हो तो बच्चों से सीख सकते हैं। यह सिर्फ थोड़ा सा फर्क मिट जाये तो यह सारी आत्माएं आप सभी के ऊपर मिट जायें। जैसे आप सभी बापदादा के ऊपर मिट गये। वैसे ही आपके भक्त आप शक्तियों के ऊपर मिट जायें। लेकिन सिर्फ यह बातें मिट जायें। जो फील होता है, यह बात मिट जाये। सभी से समझदार तो निकले जो फौरन ही सौदा कर लिया। सारी सृष्टि की आत्माओं के आगे हिम्मतवान भी हैं, समझदार भी हैं। इसलिए बापदादा कहते हैं सभी से समझदार बच्चों का यह संगठन है। हिम्मतवान भी हैं। और भल कितने भी हिम्मत रखें लेकिन यह हिम्मत तुरन्त दान महापुण्य की जो रखी, ऐसी हिम्मत अभी कोई रख नहीं सकता। नदियों में तो भल सभी नहाते हैं लेकिन आप लोगों ने सागर में नहाया है। सागर और नदियों में नहाना — फर्क तो पड़ता है ना। इसमें तो पास हो ही गई। अभी बाकी एक बात रह गई है पास होने की। उस एक बात में ऊपर ही मार्क्स है।

कोई भी डायरेक्शन कभी भी किसी रूप से, कहाँ के लिये भी निकले और कितने समय में भी निकल सकता, एक सेकेण्ड में तैयार होने का डायरेक्शन भी निकल सकता है। तो ऐसे एवररेडी सभी बने हैं? जैसे अशुद्ध प्रवृत्ति को छोड़ने के लिये कोई बात सोची क्या? जेवर, कपड़े, बाल-बच्चे आदि कुछ भी नहीं देखा ना। तो यह जैसे पवित्र प्रवृत्ति है इसमें फिर यह बातें देखने की क्या आवश्यकता है। आगे सिर्फ स्नेह में थे। स्नेह से यह सभी किया। ज्ञान से नहीं। सिर्फ स्नेह ने ऐसा एवररेडी बनाया। अब स्नेह के साथ शक्ति भी है। स्नेह और शक्ति होते हुए भी फिर इसमें एवररेडी बनने में देरी क्यों। जैसे शुरू में एलान निकला कि सभी को इस घड़ी मैदान में आना है वैसे अब भी रिपीट जरूर होना है लेकिन भिन्न-भिन्न रूप में। ऐसे नहीं कि बापदादा भविष्य को जानकर के आप सभी को एलान देवें और आप इस सर्विस के बन्धन में भी अपने को बांधे हुए रखो। बन्धन होते हुए भी बन्धन में नहीं रहना है। कोई भी आत्मा के बन्धन में आना यह निर्बन्धन की निशानी नहीं है। इसलिए सभी को एक बात पास विद आनर्स की पास करनी है, जो बातें आपके ध्यान में भी नहीं होंगी, स्वप्न में भी नहीं होंगी उन बातों का एलान निकलना है। और ऐसे पेपर में जो पास होंगे वही पास विद आनर्स होंगे। इसलिये पहले से ही सुना रहे हैं। पहले से ही ईशारा मिल रहा है। इसको कहा जाता है — महीनता में जाना। जो महीन बुद्धि होंगे उनकी विशेषता क्या होगी? महीन बुद्धि वाले कैसी भी परिस्थिति में अपने को मोल्ड कर सकेंगे। जैसी परिस्थिति उसमें अपने को मोल्ड कर सकेंगे। सामना करने का उनमें साहस होगा वह कभी घबरायेंगे नहीं। लेकिन उसकी गहराई में जाकर अपने को उसी रीति चलायेंगे। तो जब हल्के होंगे तब ही मोल्ड हो सकेंगे। नर्म और गर्म दोनों ही होंगे तब मोल्ड होंगे। एक की भी कमी होगी तो मोल्ड नहीं हो सकेंगे। कोई भी चीज को गर्म कर नर्म किया जाता है। फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ कौनसी नर्माई और गर्माई है। नर्माई है निर्माणता, गर्माई है — शक्ति रूप। निर्माणता अर्थात् स्नेह रूप। जिसमें हर आत्मा प्रति स्नेह होगा वही निर्माणता में रह सकेंगे। स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन सकेंगे न नम्रचित। इसलिए निर्माणता और फिर शक्ति रूप अर्थात् जितनी निर्माणता उतना ही — फिर मालिकपना। शक्तिरूप में है मालिकपना और नम्रता में सेवागुण। सेवा भी और मालिकपना भी। सेवाधारी भी हो और विश्व के मालिकपने का नशा भी हो। जब यह नर्माई और गर्माई दोनों रहेंगे तब हर बात में मोल्ड हो सकेंगे। हरेक को यह देखना है कि हमारी बुद्धि की तराजू गर्म और नर्म दोनों में एक समान रहती है। कहाँ-कहाँ अति निर्माणता भी नुकसान करती है और कहाँ अति मालिकपना भी नुकसान करता है, इसलिए दोनों की समानता चाहिए। जितनी समानता होगी उतनी महानता भी। अब समझा कि किस एक बात में पास विद आनर होंगे? यह फाइनल पेपर का पहले एनाउंस कर रहे हैं। हर समय निर्बन्धन। सर्विस के बन्धन से भी निर्बन्धन। एलान निकले और एवररेडी बन मैदान पर आ पहुँचा। यह फाइनल पेपर है जो समय पर निकलेगा — प्रैक्टिकल में। इस पेपर में अगर पास हो गये तो और कोई बड़ी बात नहीं। इस पेपर में पास होंगे अर्थात् अव्यक्त स्थिति होगी। शरीर के भान से भी परे हुए तो बाकी क्या बड़ी बात है। इससे ही परखेंगे कि कहाँ तक अपने उस जीवन की नईया की रस्सियाँ छोड़ी हैं। एक है सोने की जंजीर दूसरी है लोहे की। लोहे की जंजीर तो छोड़ी लेकिन अब सोने की भी महीन जंजीर हैं। यह फिर ऐसी है जो कोई को देखने में भी आ

न सके।

इसलिये जैसे कोई भी बन्धन से मुक्त होते वैसे ही सहज रीति शरीर के बन्धन से मुक्त हो सकें, नहीं तो शरीर के बन्धन से भी बड़ा मुश्किल मुक्त होंगे। फाइनल पेपर है अन्त मती सो गति। अन्त में सहज रीति शरीर के भान से मुक्त हो जायें यह है पास विद आनर की निशानी। लेकिन वह तब हो सकेगी जब अपना चोला टाइट नहीं होगा। अगर टाइटनेस होगी तो सहज मुक्त नहीं हो सकेंगे। टाइटनेस का अर्थ है कोई से लगाव। इसलिए अब यही सिर्फ एक बात चेक करो - ऐसा लूज चोला हुआ है जो एक सेकेण्ड में इस चोले को छोड़ सकें। अगर कहाँ भी अटका हुआ होगा तो निकलने में भी अटक होगी। इसी को ही एवररेडी कहा जाता है। ऐसे एवररेडी वही होंगे जो हर बात में एवररेडी होंगे। प्रैक्टिकल में देखा ना एक सेकेण्ड के बुलावे पर एवररेडी रह दिखाया। यह सोचा क्या कि बच्चे क्या कहेंगे? बच्चों से बिगर मिले कैसे जावें — यह सोचा? एलान निकला और एवररेडी। चोले से इज़ी होने से चोला छोड़ना भी इज़ी होता है, इसलिए यह कोशिश हर वक्त करनी चाहिए। यही संगमयुग का गायन होगा कि कैसे रहते हुए भी न्यारे थे। तब ही एक सेकेण्ड में न्यारे हो गये। बहुत समय से न्यारे रहने वाले एक सेकेण्ड में न्यारे हो जायेंगे। बहुत समय से न्यारापन नहीं होगा तो यही शरीर का प्यार पश्चाताप में लायेगा इसलिए इनसे भी प्यारा नहीं बनना है। इससे जितना न्यारा होंगे उतना ही विश्व का प्यारा बनेंगे। इसलिए अब यही पुरुषार्थ करना है, ऐसे नहीं समझना है कि कोई व्याधि आदि का रूप देखने में आयेगा तब जायेंगे उस समय अपने को ठीक कर देंगे। ऐसी कोई बात नहीं है पीछे ऐसे-ऐसे अनोखे मृत्यु बच्चों के होने हैं जो सन शोज़ फादर करेंगे। सभी का एक जैसा नहीं होगा। कई ऐसे बच्चे भी हैं जिन्हों का ड्रामा के अन्दर इस मृत्यु के अनोखे पार्ट का गायन सन शोज़ फादर करेगा। यह भी वही कर सकेंगे जिसमें एक विशेष गुण होगा। यह पार्ट भी बहुत थोड़ों का है। अन्त तक भी बाप की प्रत्यक्षता करते जायेंगे। यह भी बहुत बड़ी सब्जेक्ट है। अन्त घड़ी भी बाप का शो होता रहेगा। ऐसी आत्मायें जरूर कोई पावरफुल होंगी जिनका बहुत समय से अशरीरी रहने का अभ्यास होगा। वह एक सेकेण्ड में अशरीरी हो जायेंगे। मानो अभी आप याद में बैठते हो कैसे भी विघ्नों की अवस्था में बैठते हो, कैसी भी परिस्थितियाँ सामने होते हुए भी बैठते हो लेकिन एक सेकेण्ड में सोचा और अशरीरी हो जायें। वैसे तो एक सेकेण्ड में अशरीरी होना बहुत सहज है लेकिन जिस समय कोई बात सामने हो, कोई सर्विस के बहुत इंज़ट सामने हो परन्तु प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जो एक सेकेण्ड, सेकेण्ड भी बहुत है, सोचना और करना साथ-साथ चले। सोचने के बाद पुरुषार्थ न करना पड़े। अभी तो आप सोचते हो तब उस अवस्था में स्थित होते हो लेकिन ऐसा जो होगा उनका सोचना और स्थित होना साथ में होगा। सोच और स्थिति में फर्क नहीं होगा। सोचा और हुआ। ऐसे जो अभ्यासी होंगे वही सर्विस करने का पान का बीड़ा उठा सकेंगे। ऐसे कोई निमित्त हैं लेकिन बहुत थोड़े, मैजारिटी नहीं हैं। मैजारिटी हैं, उन्हों के ऊपर यहाँ ही फूल बरसायेंगे। ऐसे जो पास विथ आनर होंगे, उन्हीं के ऊपर जो द्वापर के भक्त हैं वह अन्त में इस साकार रूप में फूलों की वर्षा करेंगे। जो अन्त तक सन शोज़ फादर करके ही जायेंगे। ऐसा सर्विसएबुल मृत्यु होता है। इस मृत्यु से भी सर्विस होती है। सर्विस के प्रति बच्चे ही निमित्त हैं, ना कि माँ बाप। वह तो गुप्त रूप में हैं। सर्विस में मात-

पिता बैकबोन हैं और बच्चे सामने हैं। इस सर्विस के पार्ट में मात-पिता का पार्ट नहीं है। इस में बच्चे ही बाप का शो करेंगे। यह भी सर्विस का अन्त में मैडल प्राप्त होता है, ऐसा मैडल ड्रामा में कोई बच्चों को मिलना है। अभी हरेक अपने आप से जज करे कि हम ऐसा मैडल प्राप्त करने लिए निमित्त बन सकते हैं?

ऐसे नहीं सिर्फ पुरानी बहनें ही बन सकेंगी। कोई भी बन सकते हैं। नये-नये रत्न भी हैं जो कमाल कर दिखायेंगे।

अभी सर्विस में नवीनता लानी है। जैसे अपने में नवीनता लाते हो वैसे सर्विस में भी नवीनता लानी है। नवीनता लाने की 5 बातें याद रखनी हैं। सभी के मुख से यह निकले कि यह कहाँ से आई हैं। जैसे शुरू में निकलता था, परन्तु शुरू में वाणी का बल नहीं था अभी तुमको वाणी का बल है। लेकिन अलौकिक स्थिति का बल गुप्त हो गया है। छिप गया है। इसलिए अब फिर से ऐसी अलौकिकता सभी को दिखानी है जो सभी महसूस करें कि जैसे शुरू में भट्टी से निकली हुई आत्मायें कितनी सेवा के निमित्त बनी, अब फिर से सृष्टि के दृश्य को चेंज करने के निमित्त बनी हैं। उनसे अभी की सर्विस बड़ी है। तो ऐसी शक्तिरूप और स्नेह रूप बन जाना है। कितने भी हजारों के बीच खड़े हो तो भी दूर से अलौकिक व्यक्ति नजर आओ। जैसे साकार रूप के लिए वर्णन करते हैं, कोई भी अन्जान समझ सकता था कि यह कोई अलौकिक व्यक्ति है। हजारों के बीच में वह हीरा चमकता था। तो फालो फादर। उन्हीं के वायब्रेशन अपने में नहीं लाना, अपने वायब्रेशन से उन्हीं को अलौकिक बनाना — यही नवीनता लानी है। अभी सर्विस के कारण कुछ संसारी लोगों में मिक्स लगते हैं। सर्विस के प्रति सम्बन्ध में रहते भी न्यारे रहने का जो मंत्र है — उसको नहीं भूलना। अभी वह संबंध जो रखना था सो रख लिया, अभी इस रीति संबंध रखने की भी आवश्यकता नहीं। सर्विस कारण अपने को हल्का करने की भी जरूरत नहीं। वह समय बीत चुका। अभी लौकिक के बीच अलौकिक नज़र आओ। अनेक व्यक्तियों के बीच अव्यक्त मूर्त लगे। वह व्यक्त देखने में आयें, आप - अव्यक्त देखने में आओ यह है परिवर्तन। शुरू में कोई के वायब्रेशन अथवा संग में अपने में परिवर्तन लाते थे, इसलिए कहते थे ब्रह्माकुमारी में हठ बहुत है लेकिन वह हठ अच्छा था ना। यह है ईश्वरीय हठ, इसलिए अब वायब्रेशन के बीच रहते अपने को न्यारा और प्यारा बनाना है। इतनी सर्विस नहीं करेंगे? सिर्फ वाणी से कुर्बान नहीं होते। आप लोगों ने कैसे कुर्बानी की? आन्तरिक आत्म-स्नेह से। प्रजा तो बहुत बनाई लेकिन अब कुर्बान करना है। यह सर्विस रही हुई है। वारिस कम और प्रजा ज्यादा बनाई है। क्योंकि वाणी से प्रजा बनती है लेकिन ईश्वरीय स्नेह और शक्ति से वारिस बनते हैं, तो वारिस बनाने हैं। यह फर्स्ट स्टेज का पुरुषार्थ है। वाणी से किसी को पानी नहीं कर सकते लेकिन स्नेह और शक्ति से एक सेकेण्ड में स्वाहा करा सकते हैं। यह भी अन्त में मार्क्स मिलते हैं। वारिस कितने बनाये प्रजा कितनी बनाई। वारिस भी किस वैराइटी और प्रजा भी किस वैराइटी की और कितने समय में बनें। फाइनल पेपर आज सुना रहे हैं। किस-किस क्वेश्चन पर मार्क्स मिलते हैं एक तो यह क्वेश्चन अन्तिम रिजल्ट में होगा दूसरा सुनाया अन्त तक सर्विस का शो। और तीसरी बात थी आदि से अन्त तक जो अवस्था चलती आई है उसमें कितना बारी फेल हुए हैं, पूरा पोतामेल एनाउन्स होगा। कितने बारी विजयी बने और कितने बारी फेल हुए और विजय

प्राप्त की तो कितने समय में? कोई भी समस्या को सामना करने में कितना समय लगा? उनकी भी मार्क्स मिलेगी। तो सारे जीवन की सर्विस और स्व स्थिति और अन्त तक सर्विस का सबूत — यह तीन बातें देखी जाती हैं।

यहाँ भी हर एक एक दो के सामने स्पष्ट देखेंगे कि इन तीन बातों का क्या-क्या पोतामेल रहा है? और उनको सामने लाकर के अपनी रिजल्ट को भी पहले से ही चेक कर सकते हो और जो कमी रह गई है, उनको रिवाइज कर पूर्ण कर सकते हो। अभी भी अगर इन बातों की कमी हो तो भर लो। मेकप कर सकते हो। आधा घण्टा में भी गाड़ी मेकप हो जाती है। जो ६ घण्टा भी नहीं चलते वह आधा घण्टा में हो जाते हैं। इसलिए अब मेकप करने का लास्ट चांस है। अब रिजल्ट देखेंगे। जैसे शुरू से समाचार आते थे कि कितनी ऊंच आत्मायें हमारे पास आ पहुँची हैं। ऐसा समाचार फिर से आना चाहिए। भट्टी का अर्थ ही है बदलना। अच्छा—

“अनासक्त बनने के लिए तन और मन को अमानत समझो”

25.12.69

बापदादा को कहाँ बुलाया है और किसलिये? अभी कहाँ बैठे हो? मधुवन में तो हो लेकिन मधुवन में भी कहाँ बाप आये हैं? फुलवारी में बैठे हो या महफिल में? बापदादा रूहानी रूहों को देख रहे हैं और साथ-साथ हरेक फूल से निकले हुए रूह की खुशबुएं भी ले रहे हैं। जैसे वह लोग फूलों से इसेन्स निकालते हैं, उनको रूह कहते हैं। उनकी खुशबू बहुत अच्छी और मीठी होती है। तो यहाँ मधुवन में रहते भी आज रूहानी दुनिया का सैर कर रहे हैं। आप सभी को भी रूहानी रूप में रहकर के हर कर्म करना है तब सर्विस में वा कर्म में रौनक आयेगी। अभी नवीनता चाहते हो ना। वा जैसे चल रहे हैं उसमें सन्तुष्ट हो? नई रौनक तब आयेगी जब हर कर्म में, हर संकल्प में, वाणी में रूहानियत होगी। रूहानियत कैसे आयेगी? इसके लिये क्या करना है जो रूहानियत सदा कायम रहे? क्या बदलना है? (हरेक ने भिन्न-भिन्न बातें सुनाई) यह तो हैं मुख्य बातें जो सभी को पक्की ही हैं। परन्तु रूहानियत न रहने का कारण क्या है? वफादार, फरमानवरदार क्यों नहीं बन पाते हैं? इसकी बात है (सम्बन्ध की कमी) सम्बन्ध में कमी भी क्यों पड़ती है? निश्चयबुद्धि का तिलक तो सभी को लगा हुआ है। यह प्रश्न है कि रूहानियत सदा कायम क्यों नहीं रहती है? रूहानियत कायम न रहने का कारण यह है कि अपने को और दूसरों को जिनके सर्विस के लिये हम निमित्त हूँ, उन्हीं को बापदादा की अमानत समझ कर चलना। जितना अपने को और दूसरों को अमानत समझेंगे तो रूहानियत आयेगी। अमानत न समझने से कुछ कमी पड़ जाती है। मन के संकल्प जो करते हैं वह भी ऐसे समझ करके करें कि यह मन भी एक अमानत है। इस अमानत में ख्यानत नहीं डालनी है। दूसरे शब्दों में आप औरों को ट्रस्टी कहकर समझाते हो ना। उन्हीं को ट्रस्टी कहते हो लेकिन अपने मन और तन को और जो कुछ भी निमित्त रूप में मिला है, चाहे जिज्ञासु हैं, सेन्टर है, वा स्थूल कोई भी वस्तु है लेकिन अमानत मात्र है। अमानत समझने से इतना ही अनासक्त होंगे। बुद्धि नहीं जायेगी। अनासक्त होने से ही रूहानियत आवेगी। इतने तक अपने को शमा पर मिटाना है। मिटाना तो है लेकिन कहाँ तक। यह मेरे संस्कार हैं, यह मेरे संस्कार शब्द भी मिट जाये। मेरे संस्कार फिर कहाँ से आये, मेरे संस्कारों के कारण ही यह बातें होती हैं। इतने तक मिटना है जो कि नेचर भी बदल जाये।

जब हरेक की नेचर बदले तब आप लोगों के अव्यक्ति पिक्चर्स बनेंगे। संगमगुग की सम्पूर्ण स्टेज की पिक्चर्स क्या है? फरिश्ते में क्या विशेषता होती है? एक तो बिल्कुल हल्कापन होता है। हल्कापन होने के कारण जैसी भी परिस्थिति हो वैसी अपनी स्थिति बना सकेंगे। जो भारी होते हैं, वह कैसी भी परिस्थिति में अपने को सैट नहीं कर सकेंगे। तो फरिश्तेपन की मुख्य विशेषता हुई कि वह सभी बातों में हल्के होंगे। संकल्पों में भी हल्के, वाणी में भी हल्के और कर्म करने में भी हल्के और सम्बन्ध में भी हल्के रहेंगे। इन चार बातों में हल्कापन है तो फरिश्ते की अवस्था है। अब देखना है कहाँ तक इन 4 बातों में हल्कापन है। जो हल्के होंगे वे एक सेकेण्ड में कोई भी आत्मा के संस्कारों को परख सकेंगे। और जो भी परिस्थिति सामने आयेगी उनको एक सेकेण्ड में निर्णय कर सकेंगे। यह है फरिश्तेपन की परख। जब यह सभी गुण हर कर्म में प्रत्यक्ष दिखाई दें तो समझना अब सम्पूर्ण स्टेज नजदीक है। साकार रूप की सम्पूर्ण स्टेज किन बातों में नज़र आती थी? मुख्य बात तो अपने सम्पूर्ण स्टेज की आपे ही परख करनी है — इन बातों से। इस ग्रुप का मुख्य गुण कौनसा है? वह ग्रुप था यज्ञ स्नेही। और यह ग्रुप है यज्ञ सहयोगी। यज्ञ सहयोगी में तो सभी पास हैं। बाकी क्या करना है? ऐसी भी स्थिति होगी जो किसके मन में जो संकल्प उठेगा वह आपके पास पहले ही पहुँच जायेगा। बोलने सुनने की आवश्यकता नहीं। लेकिन यह तब होगा जब औरों के संकल्पों को रीड करने के लिये अपने संकल्पों के ऊपर फुल ब्रेक होगी। ब्रेक पावरफुल हो। अगर अपने संकल्पों को समेट न सकेंगे तो दूसरों के संकल्पों को समझ नहीं सकेंगे। इसलिये सुनाया था कि संकल्पों का बिस्तर बन्द करते चलो। जितनी-जितनी संकल्पों को समेटने की शक्ति होगी उतना-उतना औरों के संकल्पों को समझने की भी शक्ति होगी। अपने संकल्पों के विस्तार में जाने के कारण अपने को ही नहीं समझ सकते हो तो दूसरों को क्या समझेंगे। इसलिये यह भी स्टेज नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आती रहेगी, यह भी सम्पूर्ण स्टेज की परख है। कहाँ तक सम्पूर्ण स्टेज के नजदीक आये हैं। उनकी परख इन बातों से अपने आप ही करनी है।

यह आलराउण्डर ग्रुप है। आलराउण्डर का लक्ष्य क्या होता है? लक्षण हैं लेकिन जो लक्ष्य रखा है वह कुछ और आगे का रखना चाहिए। अब तक जो प्रैक्टिकल में है उस हिसाब से कौन से राजे गिने जायेंगे? अभी के सर्विस के साक्षात्कार प्रमाण कौन से राजे बनेंगे? पुरुषार्थ से पद तो स्पष्ट हो ही जाता है। भल सूर्यवंशी तो हैं लेकिन एक होते हैं विश्व के राजे, तो विश्व महाराजन् के साथ अपने राज्य के राजे भी होते हैं। अब बताओ आप कौनसे राजे हो? शुरू में कौन आयेंगे? विश्व के महाराजन् बनना और विश्व महाराजन् के नजदीक सम्बन्धी बनना इसके लिए कौनसा साधन होता है? विश्व का कल्याण तो हो ही जायेगा। लेकिन विश्व के महाराजन् जो बनने वाले हैं, उन्हीं की अभी निशानी क्या होगी? यह भी ब्राह्मणों का विश्व है अर्थात् छोटा सा संसार है तो जो विश्व महाराजन् बनने हैं उन्हां कहा इस विश्व अर्थात् ब्राह्मणकुल की हर आत्मा के साथ सम्बन्ध होगा। जो यहाँ इस छोटे से परिवार, सर्व के सम्बन्ध में आयेंगे वह वहाँ विश्व के महाराजन् बनेंगे। अब बताओ कौन से राजे बनेंगे? एक होते हैं जो स्वयं तख्त पर बैठेंगे और एक फिर ऐसे भी हैं जो तख्त नशीन बनने वालों के नजदीक सहयोगी होंगे। नजदीक सहयोगी भी होना है, तो उसके लिये भी अब क्या करना पड़ेगा? जो पूरा दैवी परिवार है, उन सर्व

आत्माओं के किसी न किसी प्रकार से सहयोगी बनना पड़ेगा। एक होता है सारे कुल के सर्विस के निमित्त बनना। और दूसरा होता है सिर्फ निमित्त बनना। लेकिन किसी न किसी प्रकार से सर्व के सहयोगी बनना। ऐसे ही फिर वहाँ उनके नज़दीक के सहयोगी होंगे। तो अब अपने आप को देखो। विश्व महाराजन् बनेंगे ना? नम्बरवार विश्व महाराजन् कौनसे बनते हैं, वह भी दिन-प्रतिदिन प्रत्यक्ष देखते जायेंगे। ऐसे नहीं कि अभी नहीं बन सकते हैं। अभी भी जम्प दे सकते हैं। मेकप करने का अभी समय है, लेकिन थोड़ा समय है। समय थोड़ा है मेहनत विशेष करनी पड़ेगी। लेकिन मेकप कर सकते हो। विश्व के महाराजन् के संस्कार क्या होंगे? आज बापदादा विश्व के महाराजन् बनाने की पढ़ाई पढ़ाते हैं। उसके संस्कार क्या होंगे? जैसे बाप सर्व के स्नेही और सर्व उनके स्नेही। यह तो प्रैक्टिकल में देखा ना। ऐसे एक-एक के अन्दर से उनके प्रति स्नेह के फूल बरसेंगे। जब स्नेह के फूल यहाँ बरसेंगे तब इतने जड़ चित्रों पर भी फूल बरसेंगे। तो यहाँ भी अपने को देखो कि मुझ आत्मा के ऊपर कितने स्नेह के पुष्पों की वर्षा हो रही है। वह छिप नहीं सकेंगे। जितने स्नेह के पुष्प उतने द्वापर में पूजा के पुष्प चढ़ेंगे। कहाँ-कहाँ कोई पुष्प चढ़ाने लिये कभी-कभी जाते हैं और कहाँ तो हर रोज़ और बहुत पुष्पों की वर्षा होती है। मालूम है? इसका कारण क्या? तो यही लक्ष्य रखो कि सर्व के स्नेह के पुष्प पात्र बनें। स्नेह कैसे मिलता है? एक-एक को अपना सहयोग देगे तो सहयोग मिलेगा। और जितने के यहाँ सहयोगी बनेंगे उतने के स्नेह के पात्र बनेंगे। और ऐसा ही फिर विश्व के महाराजन् बनेंगे। इसलिये लक्ष्य बड़ा रखो।

आज एक भक्तिमार्ग का चित्र याद आ रहा है। आज देख भी रहे थे तो मुस्करा भी रहे थे। देख रहे थे अंगुली देने वाले तो हैं ना। अंगुली दी भी है वा देनी है? कहाँ तक अंगुली पहुँची है? अगर अंगुली देनी है तो इसका मतलब है जहाँ तक अंगुली पहुँची है वहाँ तक नहीं दी है। पहाड़ उठा नहीं है। क्यों, इतना भारी है क्या? इतनों की अंगुली भी मिल गई है फिर भी पहाड़ क्यों नहीं उठता? कल्प पहले का जो यादगार है वह सफल तब हुआ है जब सभी का संगठित रूप में बल मिला है, इसलिये थोड़ा उठता है फिर बैठ जाता है। हरेक अपनी-अपनी अंगुली लगा रहे हैं परन्तु अब आवश्यकता है संगठित रूप में। स्वयं की अंगुली दी है लेकिन अब संगठन में शक्ति तब भरेगी जब वह बल आयेगा। अब शक्ति दल की प्रत्यक्षता होनी है। सभी फूल तो बने हैं लेकिन अब गुलदस्ते में संगठित रूप में आना है। अभी कोई पुष्प कहाँ-कहाँ अपनी रंगत दिखा रहे हैं, कोई अपनी खुशबू दे रहा है, कोई अपना रूप दिखा रहा है। लेकिन रूप, रंग, खुशबू जब सब प्रकार के गुलदस्ते के रूप में आ जायेंगे तब दुनिया के आगे प्रत्यक्ष होंगे। अब ऐसा प्लैन बनाओ जो संगठित रूप में कोई नवीनता दुनिया के आगे दिखाओ। एक-एक अलग होने के कारण मेहनत भी ज्यादा करनी पड़ती है। लेकिन संगठन में मेहनत कम सफलता जास्ती होगी। जब संगमयुग के संगठन को सफल बनायेंगे तब सर्विस की सफलता होगी। योग्यताएं सभी हैं लेकिन योजना तक रह जाती हैं। अब अपनी योग्यताओं से औरों को भी बाप के समीप लाने योग्य बनाओ।

यह जो ग्रुप है यह है आत्माओं के सम्बन्ध जुड़वाने की नींव डालने वाला। जैसी नींव डालेंगे वैसे ही उन्हीं की आगे जीवन बनेगी। सभी बातों में जितना खुद मजबूत होंगे उतना अनेकों की नींव मजबूत डाल सकेंगे। जितनी अपने में सर्व क्वालिफिकेशन होंगी ऐसी ही क्वालिटी आयेगी।

अगर अपने में क्वालिफिकेशन कम है तो क्वालिटी भी कम आयेगी, इसलिए ऐसे समझो कि हम सभी नींव डालने वाले हैं। अपनी क्वालिफिकेशन से ही क्वालिटी आयेगी। आपसमान तब बना सकेंगे, जब बापदादा के गुणों की समानता अपने में लायेंगे। अच्छा—